प्रातःक्लास 18.2.68 ओमशांति शिवबाबा याद हैं?

ओमशांति। रुहानी बाप बैठ रुहानी बच्चों को समझाते हैं कि आत्मा कितनी छोटी है। बहुत छोटी है और उस छोटी सी आत्मा से कितना सब बड़ा देखने में आता है। छोटी आत्मा अलग हो जाती है तो फिर कुछ भी नहीं देख सकते। आत्मा के उपर विचार किया जाता है। इतनी छोटी बिंदी क्या2 काम करती है। मैगनीफाइंगग्लास होती है उनसे बहुत छोटे2 हीरों को देखा जाता है कि कोई दाग तो नहीं है। बहुत छोटे हीरे होते हैं। तो आत्मा भी कितनी छोटी है। कैसा मैगनीफाइंग्लास है जिससे देखती है। रहती कहां है? क्या कनेक्शन है इन आंखों से? कितना बड़ा आसमान,धरती आदि देखने में आता है। बिंदी निकल जाने से कुछ भी नहीं रहता। जैसे बिंदी बाप है वैसे बिंदी आत्मा है। इतनी छोटी सी आत्मा प्योर–इम्प्योर बनती है। यह बहुत ही सोच करने की महीन बातें हैं। दूसरा कोई नहीं जानते कि आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है। इतनी छोटी आत्मा शरीर में रह क्या2 बनाती है। क्या2 देखती है। उस आत्मा में सारा पार्ट भरा हुआ 84जन्मों का। कैसे वह काम करती है वंडर है ना। इतनी छोटी आत्मा 84जन्म लेती है। एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। हम छोटी सी बिंदी में 84जन्मों का पार्ट नूंधा हुआ है। जैसे समझो नेहरू मरा अथवा क्राइस्ट मरा। आत्मा निकल गई तो शरीर मर (गया)। कितना बड़ा शरीर है। आत्मा कितनी पिचकरी है। यह भी बाबा ने बहुत बार समझाया है मनुष्यों को कैसे पता पड़े कि सृष्टि का चक्र 5000वर्ष बाद फिरता है। अपनी कोई अखबार तो है नहीं। सिर्फ मैगजीन मासिक निकलती है। इसमें भी 5/7 का मुख्य नाम डाल दें। फलाने2 ने जिस समय छोड़ा फिर हर 5000वर्ष बाद ऐसे ही शरीर छोड़ेंगे। हर 5000वर्ष बाद वह पार्ट रिपीट करते हैं। फलाना मरा यह कोई नई बात नहीं। उनकी आत्मा ने एक शरीर छोड़ दूसरा लिया। 5000वर्ष पहले भी इस नाम–रूप को इसी समय थोड़ा था। आत्मा जानती है हम एक शरीर छोड़ फिर जाकर दूसरे शरीर में प्रवेश करती हैं। अभी तुम शिवजयंती मनाते हो, दिखाते हो 5000वर्ष पहले भी शिवजयंती मनाई थी। हर 5000वर्ष बाद शिवजयंती जो हीरे तुल्य मनाते आते हैं। यह बड़ी महीन बातें हैं। विचार–सागर–मंथन कर यह सब बातें बुद्धि अंदर लानी होती हैं। फिर जो हम औरों को समझा सकें। यह त्यौहार .... है। तुम कहेंगे नई बात नहीं। हिस्ट्री रिपीट होती रहती है। हर 5000वर्ष बाद। जो भी पार्टधारी हैं हर 5000वर्ष बाद वही शरीर लेंगे। एक नाम–रूप ,देशकाल छोड़ दूसरा लेते हैं। वह भी फिर हर 5000वर्ष बाद रिपीट करेंगे। इस पर विचार–सागर–मंथन करना चाहिए।....युक्ति से लिखें जो मनुष्य वंडर खावे। हर 5000वर्ष बाद यह वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी रिपीट होती रहती है। बच्चों से पूछते हैं आगे कब मिले हो? इतनी छोटी सी आत्मा से पूछना होता है तुम इस नाम–रूप ....आगे कब मिले थे? आत्मा ने सुना ना। झट कहते हैं हां, बाबा आप से कल्प पहले मिले थे। सारा ड्रामा ....पार्ट बुद्धि में है। वह होते हैं हद के ड्रामा और एक्टर्स। यह है बेहद का ड्रामा। यह ड्रामा तो बड़ा ही एक्युरेट है। इसमें जरा भी फर्क नहीं पड़ सकता। वह होते बेहद के। मशीन पर चलते हैं। दो/चार रोल भी हैं जो फिरते हैं। यह तो अनादि,अविनाशी ड्रामा एक ही है। तुम बच्चे अभी समझते हो आत्मा कितनी छोटी है। आत्मा एक पार्ट बजाय फिर दूसरा बजाती है। 84जन्मों का कितना फिल्म रोल होगा। यह कुदरती है ना। कोई की बुद्धि में बैठेगा। है तो रिकार्ड मिसल। यह बड़ा ही वंडरफुल है। किसको समझावें? ....माया चकरी खावे। तुम आत्मा कैसे 84जन्म लेते हो। 4लाख हो न सके। 84का ही चक्र है। उनकी भी पहचान कैसे दी जाये? अखबार वाले तो न भी डालें। पैसे से डालेंगे। मैगजीन में भी घड़ी2 डाल सकते हैं। वंडर है ना। समझो कोई बैल है। अभी मरा, फिर 5000वर्ष बाद यह हमारे सामने ऐसे ही मरेगा। हम इस .....समय की ही बातें करते हैं। सतयुग में तो ऐसी बातें होंगी ही नहीं। न कलियुग में होंगे। .....आदि जो भी हैं सभी के लिए कहेंगे फिर 5000वर्ष बाद यह देखेंगे। फर्क पड़ नहीं सकता। ड्रामा (में) नूंध है। सतयुग में जनावर आदि भी बड़े फर्स्टक्लास होते हैं। खूबसूरत होते हैं तो यह सारी वर्ल्ड की

हिस्ट्री–जॉग्राफी फिर रिपीट होगी। जैसे ड्रामा की शूटिंग होती है मक्खी उड़ गई तो वह भी निकल आवेंगे। फिर वही रिपीट होंगे। अभी अपन इन छोटी2 बातों को तो खयाल नहीं करेंगे। पहले तो बाप खुद कहते हैं हम कल्प2 संगमयुगे इस भाग्यशाली रथ पर आता हूं। आत्मा ने कहा ना। कैसे इसमें आते हैं कितनी छोटी बिंदी है। उनको फिर ज्ञान का सागर कहते हैं। यह बातें तुम बच्चों में जो सयाने, समझू हैं (वह) समझ सकते हैं। बाप खुद कहते हैं मैं हर 5000वर्ष बाद आता हूं। कितनी यह वैल्युएबल नालेज है। बाप के पास यह एक्युरेट नालेज है, जो हम बच्चों को देते रहते हैं। तुमसे कोई पूछे तुम झट कहेंगे सतयुग की आयु 1250 वर्ष है। एक2 जन्म में 150वर्ष की आयु होती है। कितना पार्ट बजता है। बुद्धि में यह टोटल सारा चक्र फिरता रहता है। हम ऐसे 84जन्म लेते हैं। सारी सृष्टि इस चक्र में फिरती रहती है। यह अनादि अविनाशी ड्रामा है। बनी बनाई.....इनमें नई एडीशन ,एडल्ट्रेशन आदि नहीं हो सकती। गायन भी है चिंता ताकी कीजिये जो अनहोनी होय। जो कुछ होता है ड्रामा में नूंध है। इसको साक्षी हो देखना पड़ता है। उस नाटक में कोई ऐसा पार्ट होता है तो जो कमजोर दिलवाले होते हैं वह रोने लग पड़ते हैं। है तो नाटक ना। यह तो रीयल है। इसमें हरेक आत्मा अपने 84जन्मों का पार्ट बजाती है। ड्रामा कब बंद होना नहीं है। इसमें रोने–रूसने की कोई बात नहीं। कोई नई बात थोड़े ही है। अफसोस उनको होता है जो ड्रामा के आदि,मध्य,अंत को रियलाइज नहीं करते हैं। यह भी तुम समझते हो इस समय हम ज्ञान से जो पद पाते हैं चक्र लगाय फिर यही बनेंगे। यह बड़ी आश्चर्यवत बातें विचार–सागर–मंथन करने की ....हैं। कोई भी मनुष्य इन बातों को नहीं जानते हैं। ऋषि–मुनि भी कहते थे हम रचता और रचना के आदि,मध्य,अंत को नहीं जानते हैं। उनको क्या पता रचता इतनी छोटी बिंदी है। वही नई सृष्टि का रचता है। तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। ज्ञान का सागर है। यह बातें अभी तुम बच्चे ही समझते हो। तुम थोड़े ही कहेंगे हम नहीं जानते हैं। तुमको बाप इस समय समझाते हैं। तुमको कोई बात की अफसोस करने की दरकार नहीं। सदैव ही हर्षित रहना है। उस ड्रामा के फिल्म तो चलते2 घिस जावेंगे। पुरानी होगा। फिर बदली करेंगे। पुरानी को ....कर देते हैं। यह अविनाशी बेहद का ड्रामा है। ऐसी2 बातों पर विचार पक्का कर लेना चाहिए। हम बाप के श्रीमत पर ही चलने से पतित से पावन बनते हैं। और कोई बात हो नहीं जो हम तमोप्रधान से सतोप्रधान ....। आत्मा सतोप्रधान थी। पार्ट बजाते2 तमोप्रधान बन गई है। फिर सतोप्रधान बनना है। न आत्मा विनाश को पा सकती , न पार्ट ही विनाश को पा सकते हैं। ऐसी2 बातों पर कोई का भी विचार नहीं चलाता....। मनुष्य सुनकर वंडर खावेंगे। वह तो सिर्फ भक्तिमार्ग के शास्त्र ही पढ़ते हैं। रामायण भगवद गीता आदि सब ही हैं। कर(के) नई छपती होगी तो उनमें एड करते होंगे। इसमें तो विचार–सागर–मंथन करना होता है। .....का बैठ समझाते हैं। ज्यों का त्यों हम धारण कर लेवें तो अच्छा ही पद पा सकते हैं। सभी एक जैसा ....नहीं सकते हैं। कोई तो बड़ी महीनता से समझाते हैं। आजकल जेल में भी जाते हैं भाषण करने। वैश्याओं पास भी जाते हैं। गूंगे,बहरों के पास भी जावेंगे। उन्हों का भी हक है ना। इशारों से समझ सकते हैं। आत्मा को समझने वाली है। अंदर है ना। चित्र सामने रख दो, पढ़ तो सकेगा ना। आत्मा में बुद्धि तो है ना। भल अंधे, लूल्हे(लूले) ,लंगड़े हों तभी भी कोई न कोई प्रकार से समझ सकते हैं। चित्र तो है ही। अंधों को कान तो होगी (ना) । तुम्हारा सीढ़ी का चित्र देखो कितना अच्छा है। यह नालेज ऐसी है जो तुम कोई को भी समझाकर स्वर्ग में जाने लायक बना सकते हो। आत्मा बाप से वर्सा ले सकती है। करके आर्गन्स डिफेक्टेड होती है। यहां तो ऐसे होते ....। वहां तो आत्मा और शरीर दोनों ही कंचन होती है। नई चीज सो पुरानी जरूर होती है। यह भी ड्रामा (बना) हुआ है। एक सेकेंड न मिले, दूसरे सेकेंड से। कुछ न कुछ फर्क जरूर पड़ता है। ड्रामा को ज्यों का त्यों साक्षी हो देखना है। यह नालेज तुमको अभी ही मिलती है। फिर कब नहीं। आगे यह नालेज थोड़े ही थी।

यह अनादि बना बनाया ड्रामा है। यह अच्छी रीत समझ और धारण कर किसको समझाना है। तुम ब्राह्मण ही इस ज्ञान को जानते हो। यह तो चोपचीनी तुमको मिलती है। अच्छी ते अच्छी चीज की महिमा तो की जाती है ना। बेहद का बाप तुमको सब राज समझाते हैं। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं है नई दुनियां कैसे स्थापन होती है। फिर से यह राज्य कैसे होगा? तुम्हारे में भी नम्बरवार जानते हैं। जो जानते हैं वह दूसरों को भी समझाते हैं। बहुत खुशी में रहते हैं। कोई को तो पाई भी खुशी नहीं रहती। सभी को अपना2 पार्ट मिला हुआ है। जिनको बुद्धि में बैठा होगा विचार–सागर–मंथन करते होंगे तो दूसरों को भी समझावेंगे। तुम्हारी यह पढ़ाई जिससे तुम यह बनते हो। तुम कोई को भी समझा सकते हैं कि अपन को आत्मा समझो। आत्मा ही परमात्मा को याद करती है। आत्माएं सब ब्रदर्स हैं। यह कहावत है गॉड इज वन। बाकी इतने जो मनुष्य हैं सबमें आत्मा है ना। सभी आत्माओं का पारलौकिक बाप एक ही है। जो पक्के बुद्धि होंगे उनको कब भी फिराये न सके। कच्चे को तो झट फिराय देंगे। सर्वव्यापी के ज्ञान पर कितना डिबेट करते हैं। वह तो अपनी बातों में बहुत पक्के हो गए हैं ना। हो सकता है हमारी इस धर्म का नहीं ,धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट हैं तो फिर उन्हों को देवता कैसे कहें? इसलिए कहा जाता है आदि सनातन देवी–देवता धर्म प्रायःलोप है। तुम बच्चों को यह अभी पता है आदि सनातन देवी–देवता हमारा धर्म था। पवित्र प्रवृति मार्ग था। अभी तो अपवित्र हो (गये) हैं। जो पहले पूज्य थे वही अब पुजारी बने हैं। बहुत प्वाइंट कंठ होगी तो समझाते रहोगे। बाप भी समझाते रहते हैं। तुम औरों को भी समझाते हो। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। सिवाय तुम्हारे और कोई नहीं जानते हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार जानते हैं। अभी बाबा को घड़ी2 प्वाइंट रिपीट करनी पड़ती है ;क्योंकि नए बहुत आते हैं। शुरू में क्या हुआ?कैसे प्रवेशता हुई तुमसे पूछेंगे। फिर रिपीट करना पड़ेगा। तुम बहुत बिजी रहेंगे सर्विस में। चित्रों पर भी तुम समझाते हो। कई बच्चे ओरली भी समझते हैं। बहुत हैं जो पुराने हैं। यज्ञ की हिस्ट्री किसको भी बैठ सुनावेंगे; परंतु ज्ञान की (डीप) प्वाइंट बुद्धि में बैठ न सके। किसको समझा न सके। ज्ञान की धारणा सबकी एकरस हो न सके। इस.....गुण चाहिए। याद चाहिए, धारणा बड़ी अच्छी चाहिए तब ही आत्मा पवित्र बने और खुशी भी आये। मूल बात है ही पवित्रता की। योगबल बिगर कोई सतोप्रधान बनेगा नहीं। सतोप्रधान बनने लिए बाप को याद करना पड़े। कई तो अपने ही धंधे आदि में फंसे रहते हैं। कुछ भी पुरुषार्थ नहीं करते हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है। कल्प पहले जिन्होंने जो पुरुषार्थ किया है , करते रहते हैं। नई2 प्वाइंट भी बाप समझाते रहते हैं। पिछाड़ी में तुमको भाई2 ....रहना है। नंगे आये, नंगे जाना है। ऐसा न हो पिछाड़ी में कोई याद आवे। अभी तो कोई की कर्मातीत अवस्था हो न सके। वापस कोई जा न सके। जब तक विनाश न हो स्वर्ग में कैसे जावेंगे। जरूर या तो सूक्ष्मवतन में या यहां ही जन्म लेंगे। बाकी जो रहे, खड़े हुए होंगे उनका पुरुषार्थ करेंगे। बाकी वह भी जब बड़े हों तो। यह भी ड्रामा में सारी नूंध है। तुम्हारी एकरस अवस्था तो पिछाड़ी में होगी। ऐसे भी नहीं लिखने से भी याद हो सकता है। फिर लाइब्रेरी आदि में इतने किताब आदि क्यों होते?.....डॉक्टर लोग बहुत किताब रखते हैं। स्टडी करते रहते हैं। वह मनुष्य मनुष्य के वकील होते हैं। तुम आत्माएं आत्माओं के वकील बनते हो। आत्माओं (को) पढ़ाते हो। वह है जिस्मानी पढ़ाई। यह है रुहानी पढ़ाई। इस रुहानी पढ़ाई से 21जन्म कब भूल–चूक नहीं (होती) है। माया के राज्य में तो भूल–चूक बहुत होती रहती है। जिस कारण ही सहन करना पड़ता है। जो पूरा न पढ़ेंगे वह कर्मातीत को नहीं पावेंगे। फिर सहन करना पड़ेगा, फिर पद भी कम हो जावेगा। विचार–सागर–मंथन कर ....को सुनाते रहेंगे व चिंतन चलेगा। बच्चे जानते हैं कल्प पहले भी बाप आया था और उनकी शिवजयंती मनाई थी। लड़ाई आदि की तो बात ही नहीं। वह सब हैं शास्त्रों की झूठी बातें। यह पढ़ाई है। आमदनी में खुशी होती है ना। जिनको लाख होती है उनको खुशी जास्ती होगी। कोई लखपति ,कोई कखपति अर्थात् थोड़े पैसे वाले। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों को बापदादा का यादप्यार ,गुडमार्निंग और नमस्ते।